यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥

अनुवाद : जो मनुष्य शास्त्र विधि को त्याग कर अपने मन से मनमाना आचरण करता है, वह न तो सिद्धि को, न सुख को और न ही परम गति को प्राप्त होता है। (गीता- 16 : 23)

# भगवद्गीता धार्मिक ग्रंथ या दार्शनिक

विचार एवं लेख
हाफ़िज़ शानउद्दीन (पटना, बिहार)

मार्गदर्शन एवं सहयोग
अब्दुल अज़ीम (अहमदाबाद, गुजरात)

**यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।**
**न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥**

**(गीता- 16 : 23)**

**अनुवाद :** जो मनुष्य शास्त्र विधि को त्याग कर अपने मन से मनमाना आचरण करता है, वह न तो सिद्धि को, न सुख को और न ही परम गति को प्राप्त होता है।

# भगवद्गीता

# धार्मिक ग्रंथ
# या
# दार्शनिक

**विचार एवं लेख**
हाफ़िज़ शानउद्दीन (पटना, बिहार)

**मार्गदर्शन एवं सहयोग**
अब्दुल अज़ीम (अहमदाबाद, गुजरात)

**य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।**
**भक्ति मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥**

**अनुवाद :** जो इस गीतारूपी परम रहस्य को भक्तों में कहेगा , उसके लिए भक्तियोग की प्राप्ति निश्चित है और अन्त में वह मेरे पास लौट आयगा ।

**(गीता-18:68)**

**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।**
**मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।**

**अनुवाद :** तेरा अधिकार स्वधर्मरूप कर्म करने में ही है, कर्मफल में नहीं। तू कर्मफल का हेतु कभी न हो और कर्तव्य न करने में भी तेरी आसक्ति न हो।

**( गीता- 2 : 47)**

# भूमिका

हमारा देश भारत धर्म प्रधान राष्ट्र है, विभिन्न संस्कृति, समुदाय एवं मत-मतांतरों के लोग इस देश में वास करते हैं। जब इसका संविधान बनाया गया तो इस बात का ध्यान रखा गया कि कोई भी धार्मिक संस्थान या धर्म के उच्चाधिकारी देश के संचालन एवं नीति-निर्धारण में हस्तक्षेप नहीं करेंगे और न ही कोई आदेश पारित करेंगे। इसी आधुनिक राजनैतिक एवं संविधानी सिद्धान्त को धर्मनिरपेक्ष की संज्ञा दी गयी तथा राष्ट्र का संविधान धर्मनिरपेक्ष बनाया गया, जिसके अंतर्गत सभी नागरिकों को समान दर्जा दिया गया। इसके साथ ही सभी नागरिकों को अपने धर्म के अनुसार चलने की स्वतन्त्रता भी प्रदान की गई है।

विगत कुछ वर्षों में धर्मनिरपेक्ष संविधान में बदलाव के प्रयास किए गए हैं, जिसका धर्मनिरपेक्ष कानून के जानकारों ने विरोध किया है। धर्मनिरपेक्ष क़ानून में बदलाव की एक ऐसी ही घटना गुजरात की है। जहां वर्तमान सरकार ने सरकारी स्कूलों के पाठ्यक्रम में भगवद्गीता को शामिल करने की बात की है। गुजरात सरकार द्वारा इस असंवैधानिक तथ्य को सरकारी स्कूलों में लागू करने के आह्वान को संविधान के जानकारों ने संविधान के अनुच्छेद 28 के तहत चुनौती दी है। तो इसपर गुजरात सरकार ने ये कह कर अपना पक्ष रखा है कि भगवद्गीता धार्मिक शास्त्र नहीं अपितु दार्शनिक शास्त्र है।

इस पुस्तिका में भगवद्गीता के इसी तथ्य पर बहस की गई है कि भगवद्गीता धार्मिक ग्रंथ है या दार्शनिक ? और स्पष्ट किया गया है कि गीता दर्शन से अधिक धर्म शास्त्र है।

# विषय सूची

# धर्म और दर्शन में अंतर

**धर्म** और **दर्शन** दोनों ही परमतत्व अथवा मूल तत्व के स्वरूप का अध्ययन करते हैं , मूल तत्व से ही सृष्टि की उत्पत्ति मानी जाती है । **धर्म** आध्यात्मप्रधान होने के कारण उस मूल तत्व को ईश्वर के रूप में वर्णित करता है, जबकि **दर्शन** में परमतत्व के स्वरूप को भिन्न-भिन्न माना जाता है। साधारण व्यक्ति जब 'धर्म' शब्द सुनता या पढ़ता है अथवा स्वयं इस शब्द का प्रयोग करता है तो प्रायः उसके मन में किसी विशेष उपासना-स्थल, उसमें विशेष प्रकार से पूजा करने वाले व्यक्तियों, जन्म, नामकरण, विवाह, मृत्यु आदि महत्त्वपूर्ण अवसरों पर संपन्न किए जाने वाले विशेष कृत्यों या अनुष्ठानों तथा विशेष प्रकार के वस्त्र पहने हुए ऐसे व्यक्तियों का चित्र उभरता है जिन्हें 'साधु' या 'संत' कहा जाता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि साधारण व्यक्ति 'धर्म' शब्द को कुछ विशेष बाहय वस्तुओं, भवनों, वस्त्रों, पुस्तकों, व्यक्तियों तथा प्रार्थना या पूजा-पाठ संबंधी कर्मकांड से ही जोड़ता है।

यद्यपि धर्म का उपर्युक्त प्रचलित सामान्य अर्थ दार्शनिक दृष्टि से बहुत संतोषप्रद तो नहीं है फिर भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इसमें आंशिक सत्य अवश्य विद्यमान है। यह सर्वविदित तथ्य है कि विशेष उपासना-स्थल, पवित्र ग्रंथ, प्रार्थना अथवा पूजा-पाठ संबंधी कर्मकांड तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठान धर्म के महत्त्वपूर्ण अंग माने जाते हैं, जिन्हें हम धर्म का 'बाह्य पक्ष' कह सकते हैं। जनसाधारण धर्म के इस बाहय पक्ष को अत्यधिक महत्त्व देता है और इसी के आधार पर धर्म को अन्य सभी विषयों, विचारों तथा सिद्धांतों से पृथक करता है। ऐसी स्थिति में धर्म का अर्थ स्पष्ट करने के लिए उसके इस बाहय पक्ष की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अब जहां तक संबंध दर्शन का है तो दर्शन 'संस्कृत' भाषा का शब्द है जिसका अर्थ 'देखना या खोजना' है। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से 'दर्शन' का अर्थ 'सत्य का अनुसंधान' अथवा सत्य की खोज करना है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जो निष्पक्ष विचार एवं तर्क को आधार बना कर जीवन के मूल सत्यों का अनुसंधान करता है वही दर्शन है जिसका कोई विशेष विषय तय नहीं है। जहाँ तक भगवद्गीता का प्रश्न है तो यह महाभारत काल कि वह रचना है जिसमें धार्मिक क्रियाकलापों के साथ धर्म का दर्शन भी निहित है। धर्म के दर्शन से तात्पर्य यह है कि धर्म दर्शन उस दार्शनिक क्रिया को कहते हैं जो धर्म का बौद्धिक विवेचन करता है। जब दर्शन धर्म से संबन्धित सभी महत्वपूर्ण विषयों की सुव्यवस्थित एवं निष्पक्ष परीक्षण करता है तो उसे धर्म दर्शन की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार धर्म दर्शन का उद्देश्य व्यवस्थित रूप से धर्म को समझना है।

## भगवद्गीता का संक्षिप्त परिचय

इसी संदर्भ में यदि भगवद्गीता कि बात की जाए तो गीता भी व्यवस्थित रूप से धर्म को समझाती है, गीता का दर्शन उन सभी समस्याओं, मान्यताओं, सिद्धांतों और विश्वासों का तर्कसंगत विवेचन तथा निष्पक्ष मूल्यांकन करता है जिनका संबंध धर्म से है। गीता दर्शन का संबंध धर्म के उन सभी पक्षों से है जिनके विषय में हम सत्य एवं मिथ्या होने का प्रश्न उठा सकते हैं। कुरुक्षेत्र के मैदान में 21 दिनों तक चलने वाली उस युद्ध में अर्जुन के सारथी बने योगेश्वर श्री कृष्ण ने 700 श्लोक में जो उपदेश अर्जुन को दिया जिसमें आध्यात्मिक एवं धार्मिक ज्ञान के साथ-साथ धर्म का दर्शन भी निहित है उसी का नाम गीता है। गीता भारतीय धर्म सनातन की दो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धर्मग्रंथों में से एक अर्थात "महाभारत" के भीष्म पर्व का भाग है जिसे सनातन धर्म परंपरा में **"धार्मिक ऐतिहासिक ग्रंथ"** होने की संज्ञा प्राप्त

है। निम्न में हम गीता द्वारा आध्यात्मिक और धार्मिक ज्ञान से संबन्धित कुछ श्लोकों का अवलोकन करेंगे जिससे इस विषय को समझने में आसानी होगी कि गीता आध्यात्मिक एवं धार्मिक शास्त्र ही है जिसमें दर्शन के कुछ पहलू भी समाहित है।

## गीता और धर्म

श्रीमद् भगवद्गीता (18:66) में श्री कृष्ण जी धर्म के विषय में अर्जुन को उपदेश देते हैं -

**सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।**
**अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।**

अर्थात् : तू सभी धर्मों का परित्याग कर मेरी (ईश्वर) की शरण में आ। तू शोक मत कर मैं तुझे सभी पापों से मुक्ति दिला दूँगा।

इस श्लोक के संदर्भ को समझने का प्रयास करते है.. यहाँ श्री कृष्ण जी यह कह रहे है कि तू सभी धर्मों का परित्याग कर; यानि जिनको तू (या संसार) धर्म समझकर बैठा है वह वास्विकता में धर्म नहीं है। धर्म तो सिर्फ एक ही है, जो शाश्वत है।

आगे कहते है तू मेरी शरण में आ जा; **यानि धर्म से आशय है "ईश्वर प्राप्ति"।** धर्म को परिभाषित करते हुए स्वामी विवेकानंद जी भी कहते हैं- **'धर्म से आशय ईश्वर को धारण करने से है।'**

यदि हम धर्म शब्द की ओर दृष्टिपात करें तो धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है धारण करना। और इस जग में धारण करने योग्य क्या है ? वह ईश्वर जो तत्त्वरूप में हर जगह उपस्थित है।

गीता के इस श्लोक से ज्ञात होता है कि गीता धर्म दर्शन की बात करती है।

## गीता और धर्म की स्थापना

भगवद्गीता धर्म को स्थापित करने की बात करती है। धर्म के स्थापना मात्र से ही मानव जाती का कल्याण हो सकता ऐसा धार्मिक विचार गीता स्वयं प्रस्तुत करती है।

गीता – 4 : 7 एवं 8 ;

**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।**
**अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।**

**परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।**
**धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।।**

**अर्थ :** इस श्लोक में श्री कृष्ण कहते हैं "जब-जब इस पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है, और अधर्म आगे बढ़ता है, तब-तब मैं इस पृथ्वी पर सज्जनों और साधुओं की रक्षा करने के लिए अवतार लेता हूँ। और पृथ्वी से पाप को नष्ट करने के लिए तथा दुर्जनों और पापियों के विनाश के लिए तथा धर्म की स्थापना के लिए मैं हर युग में बार-बार अवतार लेता हूँ और समस्त पृथ्वी वासियों का कल्याण करता हूँ।"

उपरोक्त श्लोक गीता का प्रसिद्ध श्लोक है जिससे स्पष्ट होता है कि गीता दर्शन से अधिक धार्मिकता को बढ़ावा देती है।

## गीता में धार्मिक वर्णव्यवस्था

वर्णव्यवस्था का सिद्धान्त सनातन परंपरा के धार्मिक विचारों की देन है न कि दार्शनिक। क्योंकि प्राचीन धर्मशास्त्रों में **वर्णों** की **उत्पत्ति** ईश्वरकृत एवं दैवी मानी गई है। इसे परम्परागत सिद्धान्त भी कहा जाता है। इस

सिद्धान्त के अनुसार **वर्णों** की **उत्पत्ति** ईश्वरकृत है। ऋग्वेद के दशम् मण्डल के पुरुषसूक्त में **वर्ण** सम्बन्धी **वर्णों** की **उत्पत्ति** विराट पु रुष से होने की चर्चा हुई है ;

**ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।**
**ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भयां शूद्रो अजायत ॥**

**(ऋग्वेद - पुरुष सूक्त : 10 : 90 : 12)**

**अर्थ :** उस विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, बाहू से क्षत्रिय, उर (पेट) से वैश्य तथा पद से शूद्रों की उत्पत्ति हुई है।

सनातन धर्म कि इस धार्मिक मान्यता को स्वीकार करते हुए गीता स्पष्ट रूप से धार्मिक तथा दैविक कृत वर्णव्यवस्था का समर्थन करती है जो दार्शनिक विचारों तथा दर्शन शास्त्र के विपरीत है। गीता में वर्णित वर्णवयवस्था इस प्रकार है ;

**चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।**
**तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ।।**

**(गीता – 4 : 13)**

**अनुवाद :** प्रकृति के त्रिगुणों और नियत कर्म के अनुसार चारो वर्ण मेरे द्वारा रचे गए हैं। परंतु इस व्यवस्था का कर्ता होने पर भी मुझ अविनाशी को तू अकर्ता ही जान।

**ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।**
**कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः॥**

**अनुवाद :** ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के कर्म स्वाभाविक गुणों के अनुसार विभक्त किए गए हैं। **(गीता 18 : 41)**

**ब्राह्मण किसे कहते हैं ?**

**शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।**
**ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्॥**

**अनुवाद :** शांति, आत्मसंयम, तप, पवित्रता, सहिष्णुता, सत्यनिष्ठा, ज्ञान, विज्ञान और भक्ति-विश्वास, ये गुण ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म हैं।

**(गीता 18 : 42)**

**क्षत्रिय किसे कहते हैं ?**

**शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।**
**दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्॥**

**अनुवाद :** पराक्रम, तेज़, धैर्य (दृढ़ता), सूझ-बूझ युद्ध में भी पलायन न करने का स्वभाव, दान, प्रजापालन और नेतृत्व ये सब क्षत्रिय के स्वाभाविक कर्म हैं। **(गीता 18 : 43)**

**वैश्य और शूद्र किसे कहते हैं ?**

**कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।**
**परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्॥**

**अनुवाद :** कृषि, गोरक्षा और व्यापार वैश्य के स्वाभाविक कर्म हैं तथा दूसरों की सेवा करना शूद्रों का भी सहज कर्म है। **(गीता 18 : 44)**

## गीता में पुनर्जन्म का उल्लेख

पुनर्जन्म सनातन धर्म की धार्मिक मान्यता का अभिन्न अंग है जो दार्शनिक सिद्धांतों के प्रतिकूल है। सनातन मान्यतानुसार पुनर्जन्म का उल्लेख सर्वप्रथम छंदोग्य उपनिषद में मिलता है।सनातन परंपरा की धार्मिक मान्यता है कि मनुष्य अपने कर्मानुसार 84 लाख योनियों में अलग-अलग रूपों में जन्म लेता तथा मृत्यु को प्राप्त होता रहता है। गीता में वर्णित पुनर्जन्म का श्लोक इस प्रकार है :

**जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।**
**तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।।**

**अनुवाद :** जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है और मृत्यु के पश्चात पुनर्जन्म भी निश्चित है। अतः अपने अपरिहार्य कर्तव्यपालन में तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए।

**(गीता – 2 : 27)**

इस धार्मिक मान्यता का गीता में उल्लेख होना इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि गीता धार्मिक दर्शन की ग्रंथ है।

## गीता में पूजा करने का आदेश

गीता धार्मिक कर्म कांडों को करने हेतु प्रेरित भी करती है। जिस प्रकार अन्य धर्मों में धार्मिक कर्म कांडों की पूर्ति हेतु पूजा को मुख्य माना जाता है ठीक इसी प्रकार पूजा को मुख्य बनाने के लिए गीता उपदेशक भगवान श्री कृष्ण ने भी अपने पाठकों से स्वयं की पूजा करने हेतु आह्वान किया है जो इस प्रकार है ;

**मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।**
**मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे॥**

**अनुवाद :** सदैव मेरा चिंतन करो, मेरे भक्त बनो, मेरी पूजा करो और मुझे नमस्कार करो। इस प्रकार तुम निश्चित रूप से मेरे पास आओगे। मैं तुम्हें वचन देता हूँ क्योंकि तुम मेरे परम प्रिय मित्र हो। **(गीता – 18 : 65)**

## गीता और देवताओं की पूजा

निम्नलिखित श्लोकों से ज्ञात होता है कि भगवान उस मनुष्य को पसंद नहीं करते जो उसे छोड़ कर उसके आज्ञाकारी देवताओं कि पूजा करते हैं। भगवान कहते हैं ;

**यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।**
**तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥**
**(गीता-07:21)**

**भावार्थ:** जो-जो भक्त जिस-जिस देवता के रूप को श्रद्धा से पूजने की इच्छा करता है, निश्चय ही मैं उस भक्त की श्रद्धा को उसी देवता के प्रति स्थिर कर देता हूँ।

**स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।**
**लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हितान्॥**
**(गीता-07:22)**

**भावार्थ:** ऐसी श्रद्धा से समन्वित वह भक्त देवता विशेष की पूजा करने का यत्न करता है तथा अपनी इच्छा की पूर्ति करता है। किन्तु वास्तविकता तो यह है कि ये सारे लाभ केवल मेरे द्वारा प्रदत्त हैं।

**अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।**
**देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥**
**(गीता-07:23)**

**भावार्थ**: परंतु उन अल्प बुद्धि वालों का वह फल नाशवान है तथा देवताओं को पूजन वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त चाहे जैसे ही भजें, अन्त में मुझको ही प्राप्त होते हैं।

## तीनों श्लोक का सारांश

गीता ने देवताओं के उपासकों को अल्पज्ञ कह कर संबोधित किया है जिसका अर्थ है "कम जानने वाला"। देवतागण परमेश्वर की अनुमति के बिना अपने भक्तों को वर नहीं दे सकते। जीव भले ही यह भूल जाय कि प्रत्येक वस्तु परमेश्वर की सम्पत्ति है , किन्तु देवता इसे नहीं भूलते। अतः देवताओं की पूजा तथा वांछित फल की प्राप्ति देवताओं के कारण नहीं, अपितु उनके माध्यम से भगवान् के कारण होती है। अल्पज्ञानी जीव इसे नहीं जानते, अतः वे मुर्खतावश देवताओं के पास जाते हैं। किन्तु शुद्धभक्त आवश्यकता पड़ने पर परमेश्वर से ही याचना करता है परन्तु वर माँगना शुद्धभक्त का लक्षण नहीं है। जीव सामान्यता देवताओं के पास इसीलिए जाता है, क्योंकि वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए उतावला रहता है।

चैतन्यचरितामृत में कहा गया है कि "जो व्यक्ति परमेश्वर की पूजा के साथ-साथ भौतिकभोग की कामना करता है वह परस्पर विरोधी इच्छाओं वाला होता है। परमेश्वर की भक्ति तथा देवताओं की पूजा समान स्तर पर नहीं हो सकती, क्योंकि देवताओं की पूजा भौतिक है और परमेश्वर की भक्ति नितान्त आध्यात्मिक है"। अतः गीतानुसार हमें देवताओं की पूजा से ऊपर उठ कर परमेश्वर की पूजा करनी चाहिए।

## गीता उपदेशक द्वारा ईश्वर के शरण में जाने का वर्णन

गीता में जहां भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं को ही सब कुछ बताया है वहीं एक स्थान पर योगेश्वर श्री कृष्ण ने अर्जुन को एक श्लोक में ईश्वर की शरण में जाने की बात भी कही है। श्लोक इस प्रकार है ;

**तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।**
**तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥**

**अनुवाद :** हे भारत ! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा॥

**(गीता – 18 : 62)**

उपरोक्त सभी श्लोकों से ज्ञात होता है कि गीता धार्मिक ग्रंथ है, तथा अधिकांशतः श्लोकों में धार्मिक दर्शन की ही बात करती है।

## गीता धर्मशास्त्र है

धर्मशास्त्र दो शब्दों के योग से बना एक शब्द है जिसका भाववाचक अर्थ है : वह शास्त्र जिसमें धर्म के विषय में अध्ययन किया जाता है। शास्त्र शब्द के लिए शब्दकोश में अनेक अर्थ मिलते हैं उनमें एक अर्थ यह भी है कि "सर्वसाधारण के हित के लिए विधान बतलाने वाले धार्मिक ग्रंथ" शास्त्र कहलाते हैं **(नालंदा विशाल शब्द सागर : पृष्ठ – 1336)**। शास्त्र वह होते हैं जिससे शिक्षा दी जाती है "शिष्यते, शिक्ष्यते अनेन इति शास्त्रम्" **(अभिधान राजेन्द्र कोश, भाग-7, पृष्ठ- 332)**। शास्त्र अज्ञान से भी रक्षा करते हैं "शास्ति च त्रायते चेति शास्त्रम्" **(न्याय कोश – पृष्ठ -85/87)**। अर्थात कर्तव्य की शिक्षा देने वाला तथा अज्ञान के कारण दुर्दशा में गिरने से बचाने वाला परम सहायक तत्व शास्त्र है। शास्त्र का एक अर्थ अनुशासन कर्ता भी है जो व्यक्ति

की इच्छाओं पर, भावनाओं पर शासन / नियंत्रण करता है अथवा जिससे नियंत्रण होता है वह शास्त्र है।

इस प्रकार शास्त्र शब्द के तीन अर्थ प्रतिफलित होते हैं :-

1. **शिक्षा देने वाला**
2. **रक्षा करने वाला**
3. **अनुशासन करने वाला**

1. **शिक्षा देने वाला :** शास्त्र, शिक्षा को प्रचारित एवं प्रसारित करने का वो मार्ग है जिसके माध्यम से गीता उपदेशक ने गीता शास्त्र की शिक्षा का प्रथम उपदेश सूर्यदेव विवस्वान् को दिया, जिसे ग्रहण कर विवस्वान् ने मनुष्यों के पिता मनु को उपदेशित किया और मनु ने इसका उपदेश इक्ष्वाकु को दिया जैसा कि गीता में वर्णित है : -

**इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।**
**विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ (गीता- 4 : 1)**

**अनुवाद :** भगवान श्री कृष्ण ने कहा : मैंने इस अमर योग विद्या का उपदेश सूर्यदेव विवस्वान् को दिया और विवस्वान् ने मनुष्यों के पिता मनु को उपदेश दिया और मनु ने इसका उपदेश इक्ष्वाकु को दिया।

उपरोक्त श्लोक से गीता का इतिहास ज्ञात होता है कि भगवान श्री कृष्ण के मुखारविंद से निकली गीता शास्त्र अत्यंत प्राचीन ग्रंथ है, जो स्मृति द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती रही है। उल्लिखित गीता श्लोक से यह भी स्पष्ट होता है कि हस्तांतरित होता हुआ गीता का ज्ञान धार्मिक भावना और इसकी मान्यता को स्थापित करता है न कि दार्शनिक भावना और मान्यता को, क्योंकि धर्म में स्मृति और अलौकिक तथ्यों का

समाहार होता है जबकि दर्शन लिखित और लौकिक तथ्यों को तर्क की कसौटी पर तौलता और निर्णय देता है। उपरोक्त उद्धृत श्लोक इस तथ्य को भी इंगित करती है कि गीता शास्त्र का हम तक पहुँचने का यही सही क्रम है इसको मान लो, जबकि दर्शन यह कहता है कि जब तक प्रमाण न मिले तब तक उसकी खोज जारी रखो।

**2. रक्षा करने वाला :** गीता शास्त्र में रक्षा से संबन्धित एक श्लोक में वर्णित है:

**नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यावायो न विद्यते।**
**स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ।।**

**(गीता- 2 : 40)**

**अनुवाद :** इस कर्मयोग में आरम्भ का अर्थात् बीज का नाश नहीं है और उलटा फलस्वरूप दोष भी नहीं है; बल्कि इस कर्मयोग रूप धर्म का थोड़ा सा भी साधन जन्म-मृत्यु रूप महान् भय से रक्षा कर लेता है ।।

**3. अनुशासन करने वाला :** गीता शास्त्र ने अनुशासन को सुदृढ़ बनाते हुए अपने पाठक को आदेशित किया है कि यदि कोई व्यक्ति शास्त्र विधि को त्याग कर अपने मन से मनमाना आचरण करेगा तो न तो वह सिद्धि को प्राप्त करेगा, न ही सुख को और मृत्यु पर्यंत वह परम गति को भी प्राप्त करने में असमर्थ रहेगा : -

**यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।**
**न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।।**

**(गीता- 16 : 23)**

**अनुवाद :** जो मनुष्य शास्त्र विधि को त्याग कर अपने मन से मनमाना आचरण करता है, वह न तो सिद्धि को, न सुख को और न ही परम गति को प्राप्त होता है।

इसी प्रकार गीता के अगले श्लोक में अनुशासन हीनता से बचने के लिए शास्त्र को ही प्रमाण समझने का आह्वान किया गया है :

**तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।**
**ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥**

**(गीता- 16-24)**

**अनुवाद :** अतः तेरे लिये कर्तव्यअकर्तव्यकी व्यवस्थामें शास्त्र ही प्रमाण है, ऐसा जानकर तू इस लोकमें शास्त्रविधिसे नियत कर्तव्य कर्म करनेयोग्य है।

## हिन्दू विद्वानों कि दृष्टि में गीता

गीता शास्त्र पर इसके भाष्यकारों ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए लिखा है कि गीता एक शास्त्र है जो मानव जाती के उत्थान, कल्याण और परम गति के मार्ग को स्पष्ट करता है। निम्न में कुछ भाष्यकारों के उद्गार प्रस्तुत हैं ;

1. **स्वामी रामसुख दास जी :** अपने गीता भाष्य के प्रस्तावना में लिखते हैं "गीता के विषय में कोई कुछ भी कहता है तो वह वास्तव में अपनी बुद्धि का ही परिचय देता है – **'सब जानत प्रभु प्रभुता सोई। तदपि कहें बिनु रहा न कोई ॥'** (मानस बाल॰ 13: 1)

भगवान की वाणी बड़े-बड़े ऋषि मुनियों की वाणी से भी ठोस और श्रेस्ठ है, क्योंकि भगवान ऋषि-मुनियों के भी आदि हैं।

**'अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः'** **(गीता- 10 : 0 2)**

अतः कितने ही बड़े ऋषि मुनि, संत-महात्मा क्यों न हों और उनकी वाणी कितनी ही श्रेष्ठ क्यो न हो, पर वह भगवान कि दिव्यातिदिव्य वाणी 'गीता' की बराबरी नहीं कर सकती। गीता, उपनिषद और ब्रहमसूत्र ये तीन प्रस्थान

है, शेष सब पद्धतियाँ हैं। प्रस्थानत्रय में गीता बहुत विलक्षण है ; क्योंकि इसमें उपनिषद और ब्रहमसूत्र दोनों का ही तात्पर्य आ जाता है। गीता उपनिषदों का सार है पर वास्तव में गीता की बात उपनिषदों से भी विशेष है।"

2. **श्री हरीकृष्ण दास गोयंदका :** भागवत गीता का सबसे प्राचीन भाष्य जो शंकराचार्य द्वारा संस्कृत भाषा में किया गया था श्री हरीकृष्ण दास गोयंदका ने उसका हिन्दी अनुवाद किया है जिसकी भूमिका में गोयंदका जी लिखते हैं : - "श्रीमदभगवद्गीता संसार के अनेकानेक धर्मग्रंथों में एक विशेष स्थान रखती है। श्रीकृष्ण भगवान स्वयं इसके वक्ता हैं और उनका कहना है 'गीता मे हृदयं पार्थ' अतएव गीता सनातन धर्मावलम्बियों के हृदय की राजेश्वरी हो, इसमें कोई आश्चर्य नहीं।"

3. **गीता प्रेस गोरखपुर :** वास्तव में श्रीमदभगवद्गीता का महात्म्य वाणी द्वारा वर्णन करने के लिए किसी कि भी सामर्थ्य नहीं है। क्योंकि यह एक परम रहस्यमय ग्रंथ है। इसमें सम्पूर्ण वेदों का सार संग्रह किया गया है।

4. **स्वामी विवेकानंद :** गीता को समझने के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि जानना आवश्यक है। गीता उपनिषदों की एक व्याख्या है।

**(सैनफ्रान्सिस्को में दिया हुआ भाषण, 26 -मई- 1900)**

5. **श्री प्रभुपाद :** श्रीमदभगवद्गीता यथारूप की भूमिका के अंत में लिखते हैं कि आज के युग में लोग एक शास्त्र, एक ईश्वर, एक धर्म तथा एक वृत्ती के लिए अत्यंत उत्सुक हैं। अतएव गीता ही एक मात्र शास्त्र हो जो सम्पूर्ण विश्व के लिए हो "एकं शास्त्रम देवकीपुत्रगीतम्"।

**(श्रीमदभगवद्गीता यथारूप पृष्ठ – 27)**

## निष्कर्ष

उपरोक्त आलेख में गीता से उद्धृत श्लोक इस तथ्य को सुस्पष्ट करते हैं कि गीता धार्मिक विषयवस्तु पर आधारित धर्मशास्त्र है, जिसे धर्म अथवा अध्यात्म समझाने वाला अनमोल काव्यशास्त्र भी कहा जा सकता है। सभी श्लोक धर्म के मर्म को स्पष्ट करते हैं। अर्जुन को उपदेश देने के बहाने कृष्ण जी ने भव सागर के मोहान्ध जीवो को मुक्ति-मार्ग दिखलाया है। गीता में दर्शन अवश्य निहित है परंतु गीता को दर्शन शास्त्र कहना उचित नहीं है। गीता धर्म शास्त्र की ग्रंथ है जिसका सीधा संबंध धर्म के गूढ़ से गूढ़तम रहस्यों को समझाना तथा जीवन के सभी सोपानों पर संघर्षरत बने रहने को उत्प्रेरित करना है। गीता शास्त्र के अध्याय 11 श्लोक 5 से 53 में भगवान कृष्ण का विराट स्वरूप दिखाना भी धार्मिक मान्यता को दर्शाता है जिसमें तर्क का कोई स्थान नहीं, अपितु आस्था और विश्वास है। धर्म अपनी धार्मिकता के मूल के रूप में किसी के विश्वास पर ज़ोर देता है। यह विश्वास के अवधारणा से जुड़ता है और किसी चीज़ में दृढ़ विश्वास हेतु प्रेरित करता है, भले ही ऐसी चीज़ या घटना का कोई अनुभावजन्य साक्ष्य मौजूद न हो। इसके विपरीत दर्शन तभी विश्वास करेगा जब एक निश्चित विषय तर्कके परीक्षण किए गए साधनों का उपयोग करके सत्य साबित हो।

गीता में धार्मिक कर्मकांडों का अभ्यास मिलता है, यदि गीता दर्शन शास्त्र होती तो इसमें कर्मकांडों का अभ्यास शामिल नहीं होता। दर्शन की तुलना में गीता के अंदर धर्म कि मान्यताएँ अधिक मजबूत हैं और साथ ही गीता विश्वास की शक्ति पर भी अधिक प्रकाश डालती है। गीता धर्मशास्त्र है इसलिए गीता के कई श्लोक में धर्म की अलौकिक तथ्यों का वर्णन मिलता है। जबकि दर्शन अलौकिक तथ्यों पर विश्वास नहीं रखता। गीता के भाष्यकार गीता को एक धर्मशास्त्र के रूप में देखते एवं परिभाषित भी करते हैं। कई भाष्यकार गीता को उपनिषद मानते हैं जो हिन्दू धार्मिक मान्यता की

श्रेष्ठ ग्रंथ मानी जाती है। इस ठोस आधार को प्रमाण मान कर हम कह सकते हैं कि गीता दर्शनशास्त्र की तुलना में धर्मशास्त्र की अधिक मानक ग्रंथ है।

## अंतिम बात

उपरोक्त गीता के सभी श्लोक इस तथ्य को इंगित करते हैं कि गीता शुद्ध रूप से "धार्मिक और आध्यात्मिक शास्त्र" है। हाँ इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि दर्शन के कुछ पहलू अवश्य गीता में निहित हैं परंतु गीता शुद्ध रूप से "दर्शन शास्त्र" है, ये तथ्य बिलकुल बेबुनियाद और अतार्क्कि है।

अतः उक्त लेख गीता के धार्मिक शास्त्र होने के संदर्भ में प्रमाण सहित प्रस्तुत किया गया है ताकि गीता के धार्मिक एवं आध्यात्मिक शास्त्र होने में कोई शंका बाकी न रहे। इस तरह यदि जान बूझ कर गीता को स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल करना या शामिल करने का प्रयास करना यह धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र भारत के संविधान की खुली अवहेलना है। हम गुजरात सरकार या भारत गणराज्य के राज्य स्तरीय सरकारों से जो गीता को स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहते हैं उनसे विनम्र निवेदन करेंगे कि माननीय भारतीय धर्मनिरपेक्ष संविधान कि गरिमा को बरकरार रखते हुए इस तथ्य पर पुनः विचार करें।

**भवान् प्रति सद्बोधनं मात्र मम् दायित्वमस्ति, भवतः च सम्यक् विचारोपरान्त सन्मार्गे आचरन् इति। यथेच्छसि तथाकुरु।**

धन्यवाद।

**दिनांक – 10 / 05 / 2022**

- पुस्तिका की संक्षिप्त व्याख्या को सुनने के लिए निम्न में दिए गए लिंक का प्रयोग भी कर सकते हैं।

**https://youtu.be/uDmEHE8GcyM**

- **नोट**

- पुस्तिका से संबन्धित किसी भी बात के लिए आप हमसे संपर्क कर सकते हैं। हमारा संपर्कसूत्र है ;

1. uddinshan90@gmail.com
2. https://www.facebook.com/shan.uddin.1
3. **https://www.youtube.com/channel/UCeyCLxXCrIUETXDW11J1f5Q**

****